वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जुलाई – 2024

- सेवक दल के नाम
- संसार में दुःख क्यों हैं, उनका निवारण कैसे? (1)
- हालात की मांग
- श्रीमान बुद्ध सिंह जी
- देव वाणी
- शुभ संग्राम

सेवक दल के नाम

मेरे माननीय प्यारे साथी सेवको,

आप सबकी सेवक बनने की योग्यता को सामने लाकर मैं सब को हार्दिक सम्मान भाव से प्रणाम करती हूँ।

सेवक यज्ञ के दिन शुरू होने वाले हैं, इन दिनों को अधिक से अधिक सफल करना चाहिए। हमारे कितने बड़े सौभाग्य हैं कि हमें ऐसे सेवक दल का सदस्य होने का गर्व है, जो सबके सब आठ पापों से विरत हैं, मिथ्याओं के भयानक जाल से मुक्त हैं, जो विज्ञान मूलक शिक्षा के पैरोपकार हैं। इस दुनिया में जहां चारों ओर पापाचार फैला हुआ है, मिथ्याओं के साधन दिन पर दिन बढ़ रहे हैं, जिसमें अमीर, गरीब, पढ़े लिखे, विद्वान, अनपढ़ सब फंसकर अपना धन वा अपनी शक्तियां नष्ट कर रहे हैं, वहां हमें ऐसे महान, अद्वितीय सतगुरू के द्वारा पैदा किया सेवक दल मिल गया, यह हमारी खुशकिस्मती है कि ऐसे सेवक दल की निराली बिरादरी में विचरने का सौभाग्य मिल गया, कितने बड़े धन्य भाग्य!

यह सेवक दल एक ऐसा सुन्दर बगीचा है, जिसमें कहीं कृतज्ञता के नज़ारे देखने को मिलते हैं, कहीं श्रद्धा व गुण चिन्तन के, कहीं हानि परिशोध के विलक्षण दृश्य देखने को मिलते है, तो कहीं घरों में सुमेल के दृश्य। कहीं उदण्ड बच्चे माता पिता के पैरों पर गिरकर क्षमा मांगते हैं और कहीं घमंडी वा स्वार्थी पति पत्नियों के पैरों में गिरकर क्षमा प्रार्थी होते हैं क्या - क्या सुन्दर नज़ारे हमें अपने प्यारे सेवक दल में देखने को मिलते हैं। सेवक दल में परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की गंगा बहती है। जब जब किसी जन को इस प्रभावदायक गंगा में स्नान करने का अवसर मिलता है, उसकी काया कल्प हो जाती है।

इस सेवक दल रूपी गुलशन में श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जैसे साधक और प्रचारक हुए हैं, इसमें श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे शहज़ादों ने अमीरी छोड़ पीरी ग्रहण की और गुरू की रिक्शा खींचने का सौभाग्य पाया। श्रद्धेय श्रीमान अमर सिंह जी जैसों ने गुरू के भरोसे के योग्य बनने का गर्व प्राप्त किया। इस सेवक दल की वह नन्हीं कली श्रद्धेय प्रेमदेवी जी गुरू के चरणों में आकर गुरू की ही होकर रह गई। सूखी रोटियां खाईं, विरोधताएं झेलीं, पर इस बगीचे को अपनी महक दे गईं। साधू जानकी दास जी जैसे गुरू के लिए रातों को भी उपलब्ध (हाज़िर) रहने के लिए अपनी बनावटी टांग नहीं उतारते थे। गुरू महाराज ने यह फतवा दिया कि मुझे ऐसा सैक्रेटरी और कोई नहीं मिला।

इस फुलवाड़ी के इतने महकते फूल हैं, कि हम उन सबको याद करें तो नई प्रेरणाएं प्राप्त कर सकते हैं। 13 वर्ष की उमर में श्रद्धेय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी ने आकर और गुरू को एक एक जानलेवा घटना से बचाकर हम पर बहुत उपकार किए हैं। श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी ने रिश्वत न लेकर, मारपीट सहन की परन्तु सेवक दल को कलंकित नहीं होने दिया। उन्हें गुरू की शिक्षा ने बहुत बड़ा ज्ञानी बना दिया। डा० सोनपर जी जैसे शहज़ादों ने गरीबी झेली, पर सेवक दल की शान को बरक़रार रखा। श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल जी ने अमीर बनने के सपने छोड़कर गुरू के दर की फक़ीरी स्वीकार की और हमारे लिए साहित्य

शेष पृष्ठ 14

धर्म जीवन

खण्ड 35 अंक 7
जुलाई – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

संसार में दुःख क्यों हैं, उनका निवारण कैसे? (1)

यह आम सुनने को मिलता है कि "यह संसार दुखों का घर है" परन्तु यह सत्य नहीं है। संसार में दुःख और सुख साथ साथ चलते हैं। परन्तु मनुष्य सुख ही सुख चाहता है, दुःख नहीं चाहता। यह उसकी स्वाभाविक प्रकृति है। दुःख कई प्रकार के हैं, जैसे

(1) **प्राकृतिक दुख :** जो नेचर में अपने नियमों से घटित होते हैं। जैसे, भुचाल, बाढ़, वर्षा की अधिकता, वर्षा का कम होना, ऐक्सीडैंट, लाईलाज बीमारियां आदि आदि। इन दुखों से चाहकर भी हम बच नहीं सकते। बेशक अब विज्ञान के विकास से हमें कई दुर्घटनाओं के होने से पहले कुछ चेतावनियां मिल जाती हैं और वहां तक हमारी भी सुरक्षा हो जाती है। घरों को, साजोसमान को व अन्य धन सम्पत्तियों की बहुत हानि होती है परन्तु जीवित जानों का कम नुकसान होता है।

जैसा कि एक ओर विश्वास किया जाता है कि यह दुर्घटनाएं मनुष्यों के पापों का फल है, यह परमात्मा के क्रोध का फल है, हम सोचें कि छोटे बच्चों ने, सेवाकारी जनों ने कौन से पाप किए हैं दूसरी ओर यह मिथ्या विश्वास रखकर आम जन सन्तुष्ट हो जाते हैं कि यह उनके पुराने जन्मों का फल है। यह सब दिल को ढांढस देने के लिए काफी है परन्तु "नेचर की विध पूरी होवे टल न सके जो होना होवे" यदि यह पापों का ही फल होता, तो मन्दिरों की सुरक्षा तो होनी ही चाहिए थी, लेकिन बाढ़ में वह भी बह जाते हैं। जिन देवी देवतों की पूजा करने के लिए लोग जाते हैं, वह यह प्रश्न ही नहीं करते कि जो देवी देवता अपने घर अर्थात मन्दिर की रक्षा नहीं कर सके, वह हमारे दुःख कैसे हरेंगे?

रिटायर होने के बाद हमारी स्कूल टीचर का पति अमरनाथ यात्रा के लिए गया। ऐसा तुफान आया जिसमें बहुत से यात्रियों के साथ वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस तुफान में कोई भी जाता, उसका यही हशर होता। नेचर की इन त्रासदियों में जो दुःख मिलते हैं, उनसे हम बच नहीं सकते।

(2) दूसरे प्रकार के दुःख वह हैं, जिन दुखों में से गुज़रकर हमें सुख मिलता है।

एक – 2 विद्यार्थी रातों को जागता है, अपनी खेलकूद छोड़ता है। सिनेमा देखना छोड़ता है, यारी दोस्ती छोड़ता है, इन सब अभावों में और दुखों में से गुज़रकर जब उसे अच्छे नम्बर मिलते हैं, उसका कोई अच्छा कैरियर बन जाता है, तो

उसे और उसके परिवार को अथाह सुख प्राप्त होता है। तब उसका यह दुख सहना सुख में बदल जाता हैं।

धन कमाने में किसानों को कड़कती धूप में काम करने से बहुत दुख सहना पड़ता है रात - 2 भर जागना पड़ता है, सांपो का भय बना रहता है, खून पसीना एक करना पड़ता हैं, परन्तु जब फसल आती है, घर में धन आता है, सुख सुविधाएं आती हैं, तो उसे दुख सहकर भी सुख मिलता है।

एक - 2 दुकानदार सारा - सारा दिन दुकान चलाने में मेहनत करता है, परन्तु धन के आने से उसे खुशी मिलती है। उसे अपना दुःख सहन करना सफल लगता है।

एक - 2 माता 9 महीने बच्चे को पेट में रखने का जो दुःख उठाती है और बच्चे को जन्म देने में जो असह्य पीड़ा सहती है, बच्चे के जन्म होते ही, उसके मातृत्व को जो सुख मिलता है उससे वह अपना सारा दुःख भूल जाती है।

(3) तीसरे प्रकार के दुःख वह हैं जो इन्सानों को इन्सानों से मिलते हैं। आतंकवाद, युद्ध और इनके द्वारा उत्पीड़न यह दुःख मनुष्यों की नीच प्रकृति के कारण मिलते हैं। उनके घिनौने कृत्यों से घर उजड़ते हैं, स्त्रियां विधवा हो जाती हैं, बच्चे अनाथ हो जाते हैं, बच्चे भूख से भी मरते हैं। जिस तरह की पीड़ा मनुष्यों द्वारा मनुष्यों को पहुँचती है, वह दुःख दूर हो सकते हैं परन्तु धर्म के नाम पर जो सारी दुनिया में जुल्म हुए हैं और हो रहे हैं, वह दूर हो सकते थे। अगर धर्मों ने दूसरों के हक़ों का अपहरण करने से रोका होता, यदि धर्मों ने हमदर्दी की भावना पैदा की होती। यदि धर्मों ने उनकी आन्तरिक प्रकृति को दिखाया होता उनके अन्दर के द्वेष भाव को महसूस कराया होता, इसलिए अफसोस कि धर्मों ने ऐसी कोई भावना सिखाई ही नहीं। पूजा, पाठ, जप, तप, स्नान, आस्था के नाम पर लोगों को गुमराह किया है। इसलिए मनुष्य को अच्छा इन्सान बनाने में ध र्म कारगर न हुए थे और न ही अब हो रहे हैं। मनुष्यों के हाथों से मानवता कराह रही है। अभी अभी यूक्रेन के युद्ध में जो जानें गई हैं, सम्पति का नाश हुआ है वह उन जनों के द्वारा ही हुआ है, जो किसी न किसी धर्म को मानते थे।

(4) चौथे प्रकार के दुख हमारे घरों में हैं, वह दुःख भी मनुष्य स्वयं पैदा करता है। जैसे :-

(1) नशे (2) स्वाद अनुराग (3) निक्कमापन (4) काम अनुराग की प्रवृति का अनुचित अधिकार आदि - आदि। हम इस लेख में केवल एक पर विचार करेंगे, अगले लेख में दुःखों के और कारणों की व्याख्या करेंगे।

नशा अनुराग :- नशे से आरम्भ में सुख मिलता है, परन्तु नशा करते - 2 मनुष्य में धीरे - 2 नशे की चाह बढ़ती जाती है। वह नशे का गुलाम हो जाता है। यह परमात्मा का भेजा अभिशाप नहीं, यह मनुष्य के नशे के सुख अनुराग का घिनौना खेल है।

शराब की बोतल पर, सिगरेट की डिब्बी पर यह लिख देने से कि यह सेहत के लिए हानिकारक है या सिनेमा हाल में तम्बाकू से जो भयानक हालत होती है, उसको दिखा देने से क्या किसी की यह लत छूटी है? न छूटी है न छूट सकती है कि जब तक नशे की भयानक शक्ति द्वारा उत्पन्न लालसा को कोई देख न सके और उसके द्वारा हो रही हानि को महसूस न कर सके। नौजवान नशों से मर रहे हैं। माता पिता

धार्मिक पूजा, पाठ करवाते हैं, गुरूद्वारों, मन्दिरों में ले जाकर सौगन्ध दिलवाते हैं परन्तु शायद ही कोई जन ऐसा मिले, जिसको नशे के शिकंजे से छुटकारा मिला हो।

मनुष्य की इस कमज़ोरी को जानकर धन के अनुरागी जन नशे बेचते हैं। पहले मुफ्त में दूसरों को नशा पिलाते हैं, फिर जब नशे की लत लग जाती है, तो नशई स्वयं अपना धन लुटाने लग जाता है।

गरीब से गरीब आदमी जो मेहनत करता है, वह अपने परिवार का पालन पोषण कर सकता है, परन्तु घर - 2 में नशों ने बर्बादी ला दी है। पत्नी भी मेहनत करती है, परन्तु साधारणत: नशई आदमी पत्नी से भी ज़बरदस्ती पैसे मांगता है, न देने पर मार पीट करता है, बच्चों को बिलख़ते हुए देखकर भी उसे तरस नहीं आता, इस प्रकार हर रोज़ घर कलह कलेश का अड्ड़ा बन जाता है। इसमें किसी देवी देवता, परमात्मा वाहेगुरू आदि का हाथ नहीं और न ही किसी में इसके रोकने की क्षमता है। इसके क्या फल होते हैं : -

1. गरीबी बढ़ती जाती है।
2. सेहत खराब हो जाती है और उससे जिस्म की बर्बादी के साथ धन की बर्बादी होती है।
3. समाज में अपमान सहना पड़ता है।
4. लड़ाई, झगड़े होते हैं। मार पिटाई होती है।
5. जैसे आजकल के नशे फैल रहे हैं, उससे नौजवान मौत को गले लगा रहे हैं, परन्तु नशा नहीं छोड़ सकते।
6. सम्बन्ध सिर्फ बिगड़ते ही नहीं, सदा सदा के लिए टूट भी जाते हैं।
7. एक - 2 जन इतना लाचार हो जाता है कि नशा न मिलने पर आत्मघात भी कर लेता है।
8. डाक्टरों के साफ मना करने पर भी नशा नहीं छूटता और आखिर नशई मौत को गले लगा लेता है।
9. नशई चोर बन जाता है। अपनों की चोरी करता है, फिर औरों की चोरी करता है। पकड़ा जाता है तो जेल जाना पड़ता है।
10. बलात्कार की घटनाएं ज़्यादातर नशे की हालत में होती हैं। अब प्रश्न यह है कि मनुष्य नशे की लत का शिकार क्यों होता है? कोई धर्म इसके कारण को ही नहीं जानता, निवारण तो क्या करना था।

जिस मनुष्य ने किसी सुख के लिए किसी प्रकार के नशे को लेना शुरू किया, तब उस मनुष्य के आत्मा में वह नशे के सुख की शक्ति बढ़ते बढ़ते उसे उस नशे का गुलाम बना देती है। जब तक उस शक्ति का ज्ञान न हो, तब तक वह नशा नहीं छूटता। कई संस्थाएं नशा छुड़ाने का काम करती हैं, परन्तु उस वातावरण से बाहर आकर अधिकतर जन फिर नशे का शिकार हो जाते हैं।

ऐसी भयानक गुलामी से निकालने के लिए देवात्मा ने निराली रोशनी प्रदान की है। जो इस रोशनी भरपूर वातावरण में लगातार बैठता है उसे अपने भीतर नशे की गुलामी का भयानक रूप नज़र आता है और उससे निकलने का बल मिलता है।

फेरूशहर के सरदार अनोख सिंह जी अफीम के इतने गुलाम थे कि अपने पलंग के चारों पावों में अफीम की डिब्बियाँ रखने का स्थान बनाया हुआ था ताकि जिधर की तरफ भी वह लेटें अफीम खा सकें। 35 - 40 वर्ष की उम्र में

उनके शरीर के सब अंग बिगड़ रहे थे। ज्यादा देर जीने की आशा नहीं थी। एक मेहरबान कर्मचारी उन्हें इस शक्ति भरपूर वातावरण में ले आए। लगातार आते रहे, धीरे-2 उन्हें अपने नशे की गुलामी का भयानक रूप नज़र आया और उन्होंने अफीम छोड़ने का वायदा कर लिया, परन्तु अफीम छोड़कर 1½-2 महीने वह बहुत तकलीफ में से गुजरे, लूज़ मोशन हो गई। घर वाले कहें कि थोड़ी सी अफीम ले लो, हमसे आपकी तकलीफ देखी नहीं जाती। परन्तु उन्होंने कहा कि अफीम खाकर भी मरना ही था, परन्तु मैं अफीम छोड़कर मरना चाहता हूं, धीरे-2 वह ठीक हो गए और उसके बाद 40 वर्ष और जिए। फिर उन्होंने लड़कियों का स्कूल खोला और गांव के नौजवानों को नशे छुड़ाने वाले बन गए।

इस संगत में आकर जिन घरों में शराब की भट्ठियां लगी हुई थी, वह सब छूट गईं और वह नशई दूसरों के नशे छुड़ाने वाले बन गए।

यही असली करामाते हैं जो देव धर्म के बानी ने करके दिखाई हैं, जो इस दर से जुड़ेगा, उसको अपने सुख की गुलामी से निजात पाने का सौभाग्य मिलेगा और मनुष्य के अपने द्वारा उपजे दुखों का निवारण सम्भव हो पाएगा।

-सुरजीत बराड़

हालात की मांग

वर्तमान सामाजिक हालातों पर विचार करते हुए कई ऐसे प्रश्न उभर कर आए, जो कष्टदायक भी हैं और फिक्र से भरने वाले भी। हमारे समाज के गिरते हुए नैतिक स्तर को देखकर ऐसा लगता है जिस समाज में हम आए थे, वह कहाँ खो गयी। आज हम में से अधिकतर जन एक अजीब खुशफहिमी में जी रहे हैं, उसके कई कारण हैं: -

सर्वप्रथम देव प्रभाव-दायक मण्डल कभी ही पैदा होता है। जिससे कि कोई सही मार्ग दर्शन हो सके। समाज की अपनी भाषा है, जो धीरे-धीरे हम सब जान जाते हैं और उन शब्दों का प्रयोग करके हम समझ बैठते हैं कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति हमें मिल रही है। इस बहुत बड़ी ग़ल्त फहमी का आम तौर पर हम शिकार हो जाते हैं।

दूसरा पूजनीय भगवान के ग्रन्थों का पाठ या अपना निज का कोई धर्म साधन करने का पहले तो कोई समय ही नहीं, यदि कभी किसी धर्म ग्रन्थ का पाठ कर भी लें तो उसकी गहराई तक पहुंचना अति कठिन है। हम में से अधिकतर जनों को पूजनीय भगवान की शिक्षा की मानसिक तौर पर क-ख की भी उपलब्धि नहीं, हार्दिक उपलब्धि तो दूर की बात है। मोबाईलों में देव वाणी लिखकर दूसरों के पढ़ने के लिए डाल देने से लाभ नहीं होता, लाभ तभी होगा, जब हम यह लिखें कि देववाणी पढ़कर हमें स्वयं को क्या लाभ हुआ। अगर उससे कोई देव प्रभाव मिलते हैं, तो उससे अपनी नीच-अवस्था नज़र आनी चाहिए। डा० सोनपार जी ने देव समाज की पत्रिका में छाप दिया था कि जिसको अपनी ग़लती नज़र नहीं आती, उसको देव प्रभाव नहीं मिलते, उससे काफी जनों ने आहत अनुभव किया परन्तु यह अटल सत्य है।

तीसरी बात हमारी छोटी सी समाज है, हमारा स्तर भी बहुत निम्न है। समाज के किसी

विभाग की आवश्यकताओं को अनुभव करने और उन आवश्यकताओं को जुटाने में भी हम प्राय: असमर्थ हैं। यदि ऐसी हालत में किसी विभाग की ज़िम्मेवारी हम पर डाल दी जाती है, तो हम उसके साथ कितना न्याय करते हैं, इस बात से ही इसका भली भान्त अनुमान लगाया जा सकता है।

हम मनुष्य आत्मा हैं, हमारा इस खुशफहमी का शिकार होना भी स्वभाविक है कि हम समाज का सुधार कर सकते हैं और समाज को सही दर्जे पर ला सकते हैं, यह भ्रान्ति अपने आप में हमारी समस्या है। ऐसे महान कारज के लिए प्रत्येक विभाग में काम करने वालों में कुछ विशेष योग्यताएं चाहिएं, जिनकी अवर्तमानता से हमारे बहुत चाहने पर भी हम ठीक ढंग से जिम्मेवारी निभाने के योग्य नहीं होते।

चौथा एक एक पदवी भी हमारे लिए श्राप बन जाती है। हमारी वह कीमती दृष्टि जिससे बड़ों का सन्मान होता था, हम सेवा करने को सौभाग्य समझते थे, वह लोप होने लगती है। अक्सर पदवियों के मिलने से हमारे हाव भाव ही बदलने लगते हैं। हमारी अवस्था इस कदर पतित हो जाती कि अपने से योग्य जनों की आलोचना करने में भी कोई झिझक नहीं रहती। हमारी दीनता, हमारी सेवा भावना, दूसरों के गुणों को देखने की आंख, एक अधिकार के मिलते ही लोप हो जाती है। बड़े से बड़े जन के विरूद्ध फतवा देने लगते हैं। हमारी भाषा ही बदल जाती है। हमारे लिए यह अनुभव करना ही असम्भव हो जाता है कि किसी पदवी की शोभा व्यक्ति की योग्यताओं और गुणों के प्रदर्शन से होती है, दूसरा यह भी सोच नहीं रहती कि यदि हमें आज कोई पदवी मिल गई, तो वर्षों से त्याग और योग्यता से काम करने वालों की उपलब्धियां समाप्त कैसे हो गईं? ऐसा नेचर में कोई नियम नहीं।

आज के राजनैतिक दौर में अनपढ़, अयोग्य जनों को ऊँची - ऊँची पदवियां मिल जाती हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि माननीय जनों की योगयताएं तुच्छ हो गईं, या Chief Minister बनते ही वह सब योग्यताएं उस में आ गईं। यह तो हमारे देश का दुर्भाग्य है कि ज्यादातर अयोग्य जनों को भी ऐसे अधिकार मिल जाते हैं और वह समाज वा देश के कर्णधार बन जाते हैं।

समाज में एक विख्यात लेखक की बहुत आलोचना होती है और जिस ढंग से उनके विषय में कईयों के मुंह से शब्द सुनने को मिलते हैं, सुनकर दिल बहुत दुखी होता है। इसमें कोई शक नहीं कि हम मनुष्यात्मा हैं हमारे से ग़ल्तियां होती हैं वह भी कई बार किन हालातों में होती हैं, यह बात हम जानना ही नहीं चाहते क्योंकि दूसरे की बात को हमने सुना ही नहीं होता। देव धर्म की यह शिक्षा हैं यदि किसी को अपनी नीचता नज़र नहीं आती तो इसका अर्थ है कि चाहे वह कोई सेवक हों चाहे वह कर्मचारी हों, उन्हें देव प्रभाव नहीं मिलते। परन्तु यदि किसी योग्य जन की हम उन गल्तियों को ही देखें, तो कोई बात नहीं, परन्तु यदि उनकी किसी ग़ल्ती की हंसी उड़ा उड़ाकर, उनकी सारी उपलब्धियों को ही ज़ीरो कर दें तो हमारी बहुत बड़ी भूल है। जिस वरिष्ठ हस्ती ने साहित्य विभाग में सैंकड़ों किताबे लिख दीं, बड़े बड़े विद्वानों तक और देश विदेश में देव समाज का साहित्य पहुंचा दिया, हम सब मिलकर भी वह काम नहीं कर सकते। एक किताब क्या, एक लेख भी छोड़ो शायद उसकी कुछ लाईनें भी

नहीं लिख सकते, तो हमारा उनको घटिया समझना, उनके मुकाबले में अपने आपको बड़ा समझना और प्रगट करना हमारी बहुत बड़ी भूल है और धर्म की दुनियां में हमारा मार्ग पूर्णत: बन्द करने की क्रिया है। अपने सम्बन्ध में भी यह विषय घोर अन्धकार का सूचक है।

यदि हम बहुत कम पढ़े लिखे होकर संस्थाओं के उच्च पद-धारियों पर छींटाकशी करते हैं, उन्हें अपमानित करते हैं, उनकी झूठी निन्दा करके वा सुनकर अपने को बड़ा और उन्हें छोटा समझते हैं, तो हम अपने प्रति बहुत बड़ी ग़ल्तफहमी और भ्रान्ति के शिकार हैं।

एक एक बार हम धन विभाग में दान देने का सौभाग्य पाते हैं यह अच्छी उपलब्धि है, परन्तु जिन और जनों ने दान सम्बन्धी सेवाएं की हैं और इसके भिन्न मिशन की धन सम्पत्ति को बढ़ाने की कीमती सेवाएं की हैं, यदि उनके लिए सन्मान खो देते हैं, तो इससे हम दान देकर भी अपनी हानि कर बैठते हैं। जब अपने भले का कोई फिक़र नहीं तो अपने सौभाग्य को भी हम दुर्भाग्य में बदल लेते हैं।

हमारी तो यह अवस्था है कि जैसे सिनेमा हाल में बैठे हुए हम किसी के गानों, किसी की धुनों, किसी की एक्टिंग और अन्य बातों की आलोचना तो करते हैं, परन्तु यह नहीं सोचते कि हम इनमें से कोई बात भी इस स्तर की नहीं कर सकते हैं केवल आलोचक बनकर दूसरों की योग्यताओं को नकार कर और आप उनसे वंचित होकर ऐसी सोच रखते हैं तो ऐसी आलोचना हमें पतित करती है।

मेरे तुच्छ विचार में हमारी रक्षा और समाज का हित इस बात में है कि समाज में ऐसे जन हों कि जो उच्च कोटि की मानसिक और हार्दिक योग्यताएं रखते हों, वे अपनी आलोचना खुले आम सुन सकते हों, उसे नम्रतापूर्वक स्वीकार कर सकते हों और संशोधन के लिए अपने हृदय का द्वार खुला रख सकते हों और हितकर और स्पष्ट शब्दों में मुंह पर आलोचना करने वालों को विरोधी या शत्रु नहीं, बल्कि मित्र समझते हों और वे चापलूसों और स्वार्थी तत्वों के प्रति पूर्ण सावधान रह सकते हों। आवश्यकता है कि हम अपनी संकीर्णता से बाहर आएं और अपनी महत्त्वकांक्षाओं को छोड़कर समाज का हित सोचें। विचार करें कि समाज का हित हमारे अपने हित से बहुत ऊपर है। अपने सीमित दायरे में रहकर हम अपने प्रति ग़ल्तफहमियों के शिकार रहेंगे और समाज की महा हानि करेंगे। यह दावा किसी एक व्यक्ति का नहीं, नेचर का है और नेचर की घटनाएं यह सिद्ध करती रहती हैं इसलिए हमारी अक्लमन्दी इसमें है कि हम उन घटनाओं से सबक सीखें।

हम किसी organisation में रहें या न रहें, आत्मा का भला उच्च गतियों से ही होता है, वह कहीं बैठकर कर लें, नेचर के विकास का नियम पूरा होना चाहिए। परलोक के उच्च लोकों में किसी विशेष organisation से सम्बन्धित जन नहीं जाते, न ही सारे देव समाजी जाते हैं, वहां पर वही जाएंगे जिनका जीवन उच्च होगा, तब सब नेचर की छननी में छन जाएगा।

हम अपने विश्वासों, अपनी सोच विचार और अपनी मिथ्याओं के प्रति ग़ल्तफहमियों को दूर करें। अपने छोटे से दायरे में बन्द रहकर और अपने ही पक्ष के आदमियों के साथ Discussion करके दूसरों की खिल्ली उड़ाकर सन्तुष्ट न

रहें, इससे हम किसी सही नतीजे पर नहीं पहुंच सकते। सदा हर क्षेत्र में अपने से योग्य व्यक्तियों में बैठकर ही कुछ सीख सकते हैं। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जो लेखक है वह अच्छा लेबरर नहीं बन सकता, जो संस्थाओं का संचालन कर सकते हैं वह घरेलू कामों में माहिर नहीं भी हो सकते, तो यह भी जरूरी नही कि हर व्यक्ति संस्थाएं चलाने के योग्य हो। प्रत्येक मनुष्य को अपनी योग्यताओं को पहचान कर ज़िम्मेवारी लेनी चाहिए तभी सफलता मिल सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्तिगत स्वार्थों और मतभेदों को भुलाकर, दूसरों के अवगुण चिंतन के भंवर से निकल कर, उनके सद्गुणों को देखने की क्षमता पैदा करें, इससे ही हमारा निज का और समाज का भला हो सकता है।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि किसी योग्य जन की एक ग़ल्ती से हम उसे तो अपनी नज़रों से गिरा देते हैं और स्वयं कोई उच्च कारज न करके भी और कोई उच्च फल पैदा न करके भी अपने आपको महान समझने लगते हैं और इस साधारण तर्क को भी खो बैठते हैं, कि किसी दूसरे के द्वारा ग़ल्ती हो जाने पर वह गल्ती हमें महान कब और कैसे बना गई?

सचमुच उच्च और महान जनों की आलोचना करने और सुनने के लिए व्याकुल हृदय उच्च जीवन के विचार से नंग और कंगाल होकर इस दुनियां से विदा होते हैं। स्वस्थ और उच्च हृदय का लक्षण यह होना चाहिए कि वह अपने विरोधियों के भी सच्चे गुणों का गान करने के लिए बेबस हों और अपने पक्ष के लोगों की ग़ल्तियों को देखने, सुनने, स्वीकार करने और संशोधन करने का साहस रखते हों।

सन्मान भाव से

सुरजीत बराड़

श्रीमान बुद्ध सिंह जी

1. एक छुपा हुआ रत्न

श्रीमान बुद्ध सिंह जी प्राय: बीस वर्ष तक अपने घर में खेती का काम करते रहे, उनका कद बहुत लम्बा था। वह शरीर से बहुत हृष्ट पुष्ट थे। खेती का काम करने से उनका शरीर और भी बलवान हो गया था। बीस वर्ष की उम्र तक वह लिखना पढ़ना भी कुछ न जानते थे। मांस खाते थे, शराब पीते थे, उसके साथ साथ वह जपजी साहिब आदि का पाठ प्रति दिन करते थे। योगाभ्यासी साधुओं की संगत से नाक बंद करके श्वासों को चढ़ाने के साधन करते रहे, परन्तु इन साधनों के साथ साथ वह मांस और शराब का सेवन अधिक करने लग गए। उस समय वह इस क़दर मोटी बुद्धि वाले समझे जाते थे कि उनके बाज सम्बन्धी उन्हें बुद्धू के नाम से पुकारते थे। सौभाग्यवश उनके एक रिश्तेदार देवसमाज में आ चुके थे। उनके द्वारा श्रीमान बुद्ध सिंह जी को देव प्रभावदायक मंडल में श्वास लेने का अधिकार प्राप्त हुआ। देव प्रभावदायक मंडल में उनका प्रवेश करना ही था कि उनके हृदय में बहुत बड़ा उच्च परिवर्तन उत्पन्न हो गया। मांस और शराब के प्रति उनके भीतर घृणा पैदा हो गई और स्थूल पापों से उनका सदा के लिए उद्धार हो गया। उनके कई मिथ्या विश्वास और कुसंस्कार नष्ट हो गए और उनके भीतर धर्म जीवन लाभ करने की प्रबल लालसा उत्पन्न हो गई। तब से

वह धर्म संगत में जाने और रहने के लिए बहुत व्याकुल रहते थे। उसका फल यह हुआ कि वह विशेष श्रद्धा के योग्य श्रीमान देवत्व सिंह जी की संगत से लाभ उठाने और विद्या लाभ करने के लिए खेती का काम छोड़कर कल्याण नामी गांव में (जहां श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी रहा करते थे) पहुंच गए और वहां के स्कूल में दाख़िल हो गए। चार वर्ष तक वह विद्या भी पढ़ते और संग्राम करते रहे। हिन्दी और उर्दू लिखना पढ़ना सीख गए। हिन्दी सीख कर उन्होंने तत्काल ही 'जीवन पथ' नामक मासिक पत्र पढ़ना आरम्भ किया। 'गुरू शिष्य तत्व' के लेखों के पाठ ने उनके जीवन की सारी गति को बदल दिया।

सन् 1903 ई० में वह लाहौर पहुंचे। उस समय देवाश्रम में सड़क की तरफ के दो मंजिले मकान बन रहे थे। उस इमारत के काम में ख़ुद भी उन्होंने बहुत बड़ा सेवा का काम किया और मजदूरों से भी काम करवाते रहे। उनको भगवान देवात्मा के दर्शनों और देव वाणी से बहुत लाभ होता रहा, उनके हृदय की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी। भगवान देवात्मा के दर्शन और देववाणी से वह सदा के लिए देवसमाज के हो गए। उस इमारत का काम उन्होंने इतने परिश्रम से किया कि भगवान देवात्मा ने प्रसन्न होकर उन्हें एक टाईमपीस और प्रशंसा पत्र अपने पवित्र हाथों से दिया। ज्यों ही अगस्त सन् 1905 ई० में धर्म विकासालय खुला, त्यों ही श्रीमान बुद्ध सिंह जी नियमित रूप से उसमें विकासार्थी बन गए। सन् 1907 ई० में भगवान देवात्मा के पच्चीस साला जुबली उत्सव पर उन्होंने अपना सारा जीवन उनके कार्य के लिए भेंट कर दिया। और वह देवसमाज के कर्मचारी के पद पर ग्रहण किए गए, कैसा विशेष दृश्य!

उनका जन्म सन् 1879 ई० में हुआ और सन् 1899 ई० में वह देवसमाज की संगत में आए, सन् 1901 ई० में वह भगवान देवात्मा के सेवक बने। सन् 1903 ई० में वह भगवान देवात्मा के श्रीचरणों में पहुंच कर उनके देवाश्रम नामी मकान के एक भाग के बनाने में बहुत बड़े सेवाकारी हुए। सन् 1905 ई० में वह विकासार्थी बन गए और सन् 1907 ई० में कर्मचारी बन गए और अपना जीवन भेंट कर दिया। उनके संबंध में क्या हम यह नहीं कह सकते कि वह एक छुपे हुए रत्न थे। पापों की मैल में लथपथ थे, परन्तु ज्यों ही उनके हृदय पर देव प्रभावों की अमृत वर्षा हुई, त्यों ही उनके हृदय की मलिनता बड़ी तेजी से उतरने लगी और वह देव प्रभावों की वर्षा तले बैठकर अपनी विशेष योग्यता का प्रकाश करने लगे और जिस क़दर उन्होंने उन्नति लाभ की, वह हमें यह शिक्षा देती है कि दुनियां में कई ऐसे रत्न छुपे हुए हैं कि जिन तक अगर भगवान देवात्मा के देव प्रभाव पहुंचें, तो वह हमेशा के लिए भगवान देवात्मा के ही हो जावें। बेशक ऐसे आत्मा संसार में थोड़े हैं, परन्तु हैं अवश्य। जहां दुनियां में लाखों कंकर, पत्थर या कोयले होते हैं, वहां हीरे, रत्न और लाल भी होते हैं। श्रीमान बुद्ध सिंह जी छुपे हुए रत्न थे। उनके साथ संगत में आए हुए या उनसे पहले के आए हुए जन सेवक बने और सेवक ही रहे या कई सूरतों में सेवकी के श्रेष्ठ अधिकार को भी खो बैठे, लेकिन श्रीमान बुद्ध सिंह जी का हृदय विशेष था। धन्य हैं श्रीमान बुद्ध सिंह जी और धन्य हैं उनके माता पिता और अन्य पूर्वज कि जिन्होंने अपने कई धर्म भावों के कारण उन्हें ऐसी विशेष प्रकृति का दान दिया कि जिसने उनको

भगवान देवात्मा का वफ़ादार शिष्य और कर्मचारी बना दिया।

2. श्रीमान बुद्ध सिंह जी के पिता और भाइयों का उच्च दृष्टांत

श्रीमान बुद्ध सिंह जी मुश्किल से 28 साल के थे, जब वह कर्मचारी बने। देवसमाज के कर्मचारी बनने के साथ यह ज़रूरी था कि वह अपने खेती बाड़ी के काम छोड़ दें। जहां साधारणत: मां बाप और भाई बहन किसी संबंधी के कर्मचारी बनने से बहुत दुखी होते हैं और कई प्रकार के विघ्न डालते हैं, कई उनको गिराने के उपाय सोचते रहते हैं कि उन्हें जीवन के पथ से किस तरह गुमराह कर दें, वहां श्रीमान बुद्ध सिंह जी का यह बहुत बड़ा सौभाग्य था कि उनके श्रद्धेय पिता और भाईयों ने उनके कर्मचारी बनने पर अपनी बहुत बड़ी प्रसन्नता का प्रकाश किया। केवल प्रसन्नता के प्रकाश तक ही उनके भाव सीमा बद्ध नहीं रहे, किन्तु उन्होंने कहा कि श्रीमान बुद्ध सिंह जी के हिस्से की खेती और उनके घर का काम काज हम लोग अपने आप करेंगे और उनकी पत्नी और बच्चों आदि के निर्वाह में भी सहायता देंगे। यह बहुत हर्ष का विषय है कि श्रीमान बुद्ध सिंह जी के पिता और दोनों भाई वर्षों तक ऐसा ही करते रहे और श्रीमान बुद्ध सिंह जी के लिए यह बहुत आसान कर दिया कि वह अपनी सब शक्तियों को देवसमाज की विविध प्रकार की सेवाओं में उत्साह पूर्वक खर्च करके जहां अपने जीवन को सफल करें, वहां देवसमाज के काम की भी उन्नति करने में महत्त्वकांक्षी हों। इसीलिए एक तरफ हम श्रीमान बुद्ध सिंह जी के हृदय की विशेषता को सन्मुख लाकर श्रद्धा भाव से भर जाते हैं और दूसरी तरफ उनके पिता और भाईयों के लिए भी सम्मान भाव का प्रकाश करते हैं। इस संसार में ऐसे पिता और ऐसे भाई कहां मिलते कि जो अपने बेटे और भाई के देवसमाज का कर्मचारी बनने पर न केवल अपनी प्रसन्नता का प्रकाश करें, किन्तु उससे भी बढ़कर उनके दुनियावी काम काज को अपने ज़िम्मे लेकर बहुत खुशी के साथ उन्हें पूरा करें और इस प्रकार उनके बीवी बच्चों के निर्वाह में सहायता करें। काश! देव समाज के भीतर अधिक से अधिक ऐसे पिता और अधिक से अधिक ऐसे भाई उत्पन्न हों।

3. होनहार और कामयाब कर्मचारी

ज्यों ही श्रीमान बुद्ध सिंह जी कर्मचारी बने त्यों ही ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह तो बहुत होनहार और आत्महित और पर सेवा का काम करने वाले कर्मचारी हैं। वह अपने आप को जीवन दायक मंडल में इस क़दर अनुभव करने लगे, जैसे कि बतख़ का बच्चा पानी में अनुभव करने लगता है। वह बारी बारी से कई क्षेत्रों के परिचालक रहे। वह पलवल और बड़वाला आदि के नए नए कार्य स्थानों में भी इस क़दर कामयाबी लाभ करते रहे कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी फ़रमाते हैं कि श्रीमान बुद्ध सिंह जी एक ऐसे कर्मचारी हैं कि जिनको जिस क्षेत्र में भी भेजा जावे, वह वहां पर एक सप्ताह में ही हल चल उत्पन्न कर देंगे। एक बार श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के पास तीन ग्रेजुएट बैठे हुए थे, वह तीनों ही भगवान देवात्मा के सेवक थे, श्रीमान बुद्ध सिंह जी भी वहां वर्तमान थे। श्रीमान जी ने फ़रमाया, देखो यह तीन ग्रेजुएट बैठे हैं तीनों ही भगवान देवात्मा के सेवक हैं, अगर इनमें से किसी एक या तीनों को

ही किसी खास क्षेत्र में भेजा जावे तो वहां के काम को नहीं सम्भाल सकेंगे; परन्तु अगर श्रीमान बुद्ध सिंह को वहां भेजा जावे, तो श्रीमान बुद्ध सिंह जी वहां के सारे काम को अच्छी तरह सम्भाल लेंगे। श्रीमान बुद्ध सिंह जी के चार्ज में कई क्षेत्र रहे। वह भठिंडा क्षेत्र के परिचालक रहे, वह अम्बाला क्षेत्र के भी परिचालक रहे, वह जड़ांवाला और पलवल जैसे नए स्थानों में काम करते रहे। यहां तक कि वह रावलपिण्डी जैसे पढ़े लिखे लोगों के गढ़ में भी जाकर क्षेत्र परिचालक रहे। जगह जगह जाकर नए जनों को श्रद्धालु और सेवक बनाते रहे। जिन दिनों वह रावलपिण्डी क्षेत्र में परिचालक का काम करते थे, तब श्रद्धा के योग्य श्रीमान पंडित दीनानाथ जी बाली इस क्षेत्र के मुखिया थे और बहुत बड़े काबिल मुखिया थे। उनके जान पहचान रखने वाले अच्छे पढ़े लिखे जन सभाओं में आते थे। एक बार का ज़िकर है कि श्रीमान बुद्ध सिंह जी ने एक व्याख्यान दिया, तब एक जन जो अच्छे पढ़े लिखे थे, उनसे पूछने आए क्या यह सरदार जी एम.ए. हैं? क्यों न कोई जन ऐसे सवाल पूछे जब कि उनके भीतर वह उच्च बोध उत्पन्न हो चुके थे, जिनके द्वारा वह ऐसे सत्यों और तत्वों का सुन्दरता से प्रकाश करते थे कि जिनका संबंध आत्मिक जगत के साथ है। और इसलिए जिनकी कीमत और क़दर ब्यान से बाहर है। हो सकता है कि कोई जन पूछे कि अगर प्राइमरी पास जन इस क़दर योग्यता का मालिक हो सकता है, तो फिर शिक्षा पाने की ज़रूरत ही क्या है। दिमागी रोशनी की हमें हर समय वैसी ही ज़रूरत है कि जिस प्रकार बाहर की रोशनी की। एक अन्धा जन अच्छा कवि हो सकता है, क्योंकि दिमाग की खास रोशनी रखता है, परन्तु इससे आंखों की क़दर चली नहीं जाती। अच्छे कवि को अच्छी आंखों की भी ज़रूरत है, ताकि वह नए से नए दृश्यों को भी देख सके। अन्धा जन कवि होकर इतना वसीह देख नहीं सकता, जितना आंखों वाला कवि देख सकता है। वह इसलिए कि आंखों के द्वारा जो साक्षात् ज्ञान होता है, उससे वह अन्धा कवि वंचित है। ठीक इसी प्रकार दिमागी रौशनी से वंचित जन सात्विक हो सकता है, परन्तु उसकी सात्विक दुनिया का दृश्य दिमागी रोशनी से वंचित होने के कारण इतने बड़े पैमाने से कारआमद नहीं हो सकता, जिस प्रकार एक विद्वान सात्विक जन को हो सकता है। श्रीमान बुद्ध सिंह जी का यह बहुत बड़ा सौभाग्य था कि उनके भीतर कुछ सात्विक भाव उत्पन्न हो गए कि जिनके द्वारा वह सात्विक भावों की खुशबू औरों तक पहुंचा कर उनको अपनी तरफ आकृष्ट कर लेते थे। सात्विक भावों की दुनिया बेशक विचित्र है, परन्तु सात्विक भाव शक्ति रूप में हों, तभी उनकी महिमा है और तभी उनका जादू है। यदि श्रीमान बुद्ध सिंह जी विद्वान होते तो गजब ढाते। विशेष हृदय रखने के कारण वह सात्विक भावों को जाग्रत कर सके इसलिए वह और हृदयों पर जय लाभ करते थे।

4. अच्छा और ज़बरदस्त जरनैल

कई वर्ष तक लगातार देवसमाज धर्म विकासालय में शिक्षा पाकर और देवात्मा के देव प्रभावों को लाभ करके उनके भीतर की योग्यता इस क़दर बढ़ गई और देवसमाज के साथ उनका लगाव इतना अधिक हो गया, कि वह अपनी योग्यता के अनुसार एक विजयी जन बन गए, जिस क्षेत्र में उनकी ज़रूरत पड़ी, वह वहां भेजे

गए और जहां गए, वहां भगवान देवात्मा के कार्य का सिक्का जमा कर आए। जिस प्रकार ऊपर वर्णन किया गया है कि भठिंडा क्षेत्र के परिचालक वह रहे, अम्बाला क्षेत्र के परिचालक वह रहे, पलवल जैसी नई जगह में वह काम करते रहे, जड़ांवाला में उन्होंने काम किया, रावलपिण्डी क्षेत्र के परिचालक वह रहे, अपने परिवार में भी उन्होंने हलचल उत्पन्न कर दी। बीस जनों को भगवान देवात्मा की शरण में लाए। श्रीमान हरनाम सिंह जी मलके जैसे रत्न कर्मचारी को भी उनकी संगत से ही देवसमाज में आने और कई पापों से बचने का अवसर प्राप्त हुआ और फिर वह भगवान देवात्मा के साक्षात् दर्शन और देव संगत को पाकर उनकी न्याई देवसमाज के कर्मचारी बन गए। इसके भिन्न जब कभी समाज ने उन्हें किसी क्षेत्र में दान एकत्र करने के लिए भेजा, तब वह इस काम को भी बहुत सफलता के साथ पूरा करते रहे। एक या दो बार तो भगवान देवात्मा ने उनको देवसमाज प्रबन्धक परिषद् का सभासद भी बना दिया। यह सब विचित्र लीला इस बहादुर जरनैल के जीवन से इसलिए प्रकट हुई कि वह भगवान देवात्मा के प्रति सात्विक श्रद्धा का अति मूल्यवान भाव रखते थे। उनके संबंध में अच्छे पाए का कृतज्ञ भाव रखते थे। उनके भीतर अपने हृदय की मैल को धोने के लिए हानि परिशोध का भाव जाग्रत हो गया था। दूसरों के हित के लिए आत्म त्याग और आत्म समर्पण के सुन्दर भावों को भी वह अपने हृदय में उत्पन्न कर चुके थे। उनके हृदय के भीतर सफाई और प्रबन्ध विषयक सद्गुण भी उत्पन्न हो चुके थे। एक सीमा तक उनमें कर्तव्य विषयक मूल्यवान बोध भी जाग्रत हो चुका था। वह अपने ज़िम्मे के काम को बहुत मेहनत के साथ पूरा करते थे। ऐसे उच्च और सुन्दर भावों को प्राप्त होकर वह अपने जीवन से भगवान देवात्मा के कार्य में अच्छे कामयाब जरनैल साबित हुए।

देव वाणी

जो आत्मा भगवान देवात्मा की सेवकी में ग्रहण अथवा दीक्षित होकर देव समाज में प्रविष्ट हो चुके हैं, उनके लिए आवश्यक है, कि वह अपने आपको देव समाज का एक अंग अथवा प्रत्यंग अनुभव करें, और उसकी एक वा दूसरे प्रकार की उन्नति के लिए अपनी योग्यता के अनुसार अपनी एक वा दूसरी शक्ति के द्वारा यत्न करना अपना कर्तव्य समझें। जीवन्त शरीर के भीतर जैसे प्रत्येक छोटा और बड़ा अंग जब उसकी रक्षा, पालना और उन्नति में सहायता करता है, तभी वह उस का जीवन्त अंग समझा जाता है, और जब कोई अंग इस प्रकार कार्य करना छोड़ देता है, तभी वह मृत अंग समझा जाता है। ऐसी अवस्था में या तो वह काट दिया जाता है, या यूं ही निकम्मा पड़ा रहकर शरीर के लिए बोझा अथवा कई अवस्थाओं में हानि का कारण रहता है। इसी प्रकार प्रत्येक सेवक को समझना चाहिए, कि वह जो देव समाज की जीवन्त गठन का अंग बना है, उसे अपने जीवन की गति के द्वारा अपने आपको उसका जीवन्त अंग प्रमाणित करना है। अर्थात् उसकी एक व दूसरी प्रकार की उन्नति में भाग लेकर जहां उसके साथ अपने सम्बन्ध को सफल करना है, वहां इस सेवा से अपने जीवन को उच्च गति में

उन्नत करना है। जिन-जिन शुभ कार्यों के द्वारा कोई सेवक देव समाज के लिए जीवन्त और हितकर अंग प्रमाणित हो सकता है, उनमें से कुछ यह है :-

(1) वह अपने पारिवारिक और अन्य जनों में देव समाज और उसके संस्थापक का वर्णन कर उनके प्रति श्रद्धा के भाव को उत्पन्न कर सकता है।

(2) देव समाज अपनी पहली श्रेणी के सेवकों से जिन पापों को छुड़ाती है, उनमें से किसी एक वा दूसरे पाप से अपने किसी देशवासी को किसी उचित उपाय के द्वारा बचाने का यत्न कर सकता है।

(3) आप किसी उच्च श्रेणी का सेवक होकर अपने से अपेक्षाकृत नीचे के सेवकों की उच्च गति के साधनों आदि के द्वारा सहायता कर सकता है।

(4) अपने साथी सेवकों और समाज के कर्मचारियों के जीवन की उन्नति और अधिक से अधिक सफलता अथवा सारी समाज की उन्नति के लिए प्रतिदिन मंगल कामना कर सकता है।

(5) देव समाज के नाना हितकर कामों को धन के द्वारा सहायता कर सकता है।

(6) समाज की ओर से जिन विविध स्थानों में सेवकों और श्रद्धालुओं के बच्चों और स्त्रियों के हित के लिए विशेषकर और साधारण जनों के हित के लिए साधारण रूप से जो पाठशालाएं स्थापन की गई हैं, उनमें अपना समय वा धन देकर सहायता कर सकता है।

(7) समाज के सेवकों, उनके परिवारों और साधारण जनों के हित के लिए जो विविध स्थानों में औषधियां बांटी जाती हैं, इस कार्य में समय और धन से सहायता कर सकता है।

(8) समाज की ओर से सेवकों और साधारण जनों के हित के लिए जो पुस्तकें छप चुकी हैं, उनकी इकट्ठी कापियां लेकर अधिकारी जनों को उनके मोल लेने के लिए प्रस्तुत करके उन्हें बेच सकता है। इत्यादि इत्यादि।

इस प्रकार की बहुत सी बातें हैं, कि जो एक छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सेवक येाग्यता और अवस्था के अनुसार काम करके अपने आपको समाज का जीवन्त अंग प्रमाणित कर सकता है। और इस सेवा के द्वारा अपने जीवन का भी भला कर सकता है।

<u>बाकि पृष्ठ 2</u>

का अम्बार छोड़ गए, प्रिंसीपल कैसा होना चाहिए इसका एक स्वर्णीय उदाहरण छोड़ गए।

एक ओर श्रीमान मनोहर लाल जी जैसे ईमानदार और श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी अनपढ़ों जैसे भी गुरू की शिक्षा के ज्ञानी बन गए।

इस बाग के इतने सुन्दर फूल हैं, जिनकी महक से हमारा सेवक दल महक रहा है।

इन दिनों में अधिक से अधिक उनकी जीवनियों को पढ़ें और हम उनसे प्रेरणा लेकर अपने भीतर भी कुछ देव प्रभावों की महक पैदा कर सकें। सेवकों के गुण चिन्तन करें, उनके उपकारों को याद करें, उन्हें पत्र लिखें, अगर किसी से दूरी है, तो उसे दूर करें। अपनी ग़ल्तियों के लिए क्षमा प्रार्थना करें तभी हमारा सेवक यज्ञ मनाना सफल हो सकता है।

-सुरजीत बराड़

उपलब्धि

थोड़ा सा सम्मान मिला,
पागल हो गये।
थोड़ा सा धन मिला,
बेकाबू हो चले।
थोड़ा सा ज्ञान मिला,
उपदेश की भाषा सीख ली।
थोड़ा सा यश मिला,
दुनियाँ पर हँसने लगे।
थोड़ा सा रूप मिला,
दर्पण को तोड़ डाला।
थोड़ा सा अधिकार मिला,
दूसरों को तबाह कर दिया।
इस प्रकार तमाम उम्र,
छलनी से पानी भरते रहे।
अपनी समझ से,
बहुत बड़ा काम करते रहे।

भजन

देवगुरू के सेवको मेरे प्यारे साथियो,
फख़्रे भारत क़ौम के, आंखों के तारे साथियो। 1

सारी दुनिया में निराली है तुम्हारी मंडली,
बज़्में हस्ती में अलग सबसे न्यारे साथियो। 2

देवगुरू के देव प्रभावों को पाकर बन गए,
आत्मिक दुनिया में तुम रोशन सितारे साथियो। 3

खुशनसीबी मेरी मैं भी आपका साथी बना,
पाए तुमसे मैंने हैं उपकार भारे साथियो। 4

बरकतें मुझको मिलीं नायाब सच्चे धर्म की,
आ गया हूं दरमयां जब से तुम्हारे साथियो। 5

श्रद्धेया, परमेश्वर दत्त, और तुम देवत सिंह,
सुरख़रू परलोक को तुम हो सिधारे साथियो। 6

तुम जो आगे बढ़ गए मुड़ देखना पीछे ज़रा,
धर्म सम्बंधी कोई तुम को पुकारे साथियो। 7

बेनती मेरी है तुमसे और गुरू भगवान से,
हो सुफल जीवन मेरा तुमरे सहारे साथियो। 8

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

शुभ संग्राम

दिनांक 16 जून से 21 जून 2024 तक मल्लेकां, गंगानगर, पदमपुर, गजसिंहपुर, और एक अन्य स्थान पर शुभ संग्राम किया गया। इन स्थानों पर सभाओं के अतिरिक्त साथी सेवकों से मुलाकात की गई और उनसे हितकर बातचीत होती रही। कुछ पारिवारिक सभाएं भी की गईं। श्रीमान जसविंद्र सिंह जी अपनी कार के द्वारा सेवाकारी होते रहे । श्रीमान सुखदेव सिंह जी जोसन सभाओं में अपने बहुत अच्छे ब्यान के द्वारा और कई बार विजिट के दौरान अपनी बातचीत से सेवाकारी हुए। 16 जून 2024 को मल्लेकां मन्दिर में सुबह रविवार का साधन श्रीमान सरताज सिंह जी ने करवाया ।

मल्लेकां 16 जून 2024 : शाम 6.00 बजे

सभापति : श्रीमान गौतम जी,

सबसे पहले सभा में बैठे दो बच्चों को प्रणाम का साधन करने के लिए बताया गया। उन्हें माता पिता के उपकारों के विषय में बताया गया। सभापति जी ने बताया कि इंसान ने विकास क्रम के दौरान बहुत उन्नति की है। वो चांद पर जाने और रहने का प्रोग्राम बना रहा है परन्तु उसे इस पृथ्वी पर रहना और बसना नहीं आया है। मनुष्य के सम्बन्धों में नर्क है । देवात्मा रिश्तों को कैसे हितकर और मीठा बनाते हैं उसका वर्णन किया गया। माता पिता के रूप का वर्णन किया गया। माता पिता के संबंध में भजन गाया गया। श्रीमान जागीर सिंह जी ने सभा से प्रभावित होकर अपने माता पिता जी के निमित्त मन्दिर के लिए 30 कुर्सियां दान में देने का वायदा किया।

17 जून 2024, सुबह 8.30 बजे

सबसे पहले महिमा विषयक भजन गाया गया। फिर श्रीमान गुरुदेव राज जी ने "तेरे असरों से बाहर अगर जायेंगे" भजन का गान किया।

सभा में सबसे पहले बच्चों की सभा की गई। बच्चों के साथ माता - पिता के उपकारी रूप का वर्णन किया गया। उन्हें माता - पिता को प्रणाम करने के लिए प्रेरित किया गया । फिर बच्चों से वनस्पति जगत के उपकारों के बारे में पूछा गया और इस उपकारी जगत की सेवा के लिए प्रेरणा की गई। सभापति जी ने अच्छे वातावरण और बुरे वातावरण को काफी उदाहरणों के साथ वर्णन किया। उन्होंने बताया कि कैसे अच्छे वातावरण का हमारे जीवन के विकास में योगदान है और बुरे वातावरण से हमारा जीवन कैसे बर्बाद हो जाता है। देव समाज के देव प्रभाव दायक वातावरण से कैसे इंसानी जीवनों में परिवर्तन आता है उसका वर्णन किया गया।

सभा के पश्चात श्रीमान गौतम जी और श्रीमान जसविंद्र सिंह जी, श्रीमान मेहर सिंह जी की सेहत का पता लेने और मिलने के लिए उनके घर गए । फिर दोनों धर्म संबंधी श्रीमान अजीत सिंह जी और उनके भाई को मिलने उनके घर गए उन्हें सभाओं में आने के लिए बार बार प्रेरणा की गई ।

17 जून 2024 शाम 6.00 बजे

सबसे पहले श्रीमान गुरुदेव राज जी ने भजन का गान किया । फिर सभापति जी ने भौतिक रोशनी मानसिक रोशनी और सात्विक रोशनी और देव (रोशनी) ज्योति के भिन्न - भिन्न कार्यों का वर्णन किया । उन्होंने बताया कि कैसे भौतिक रोशनी के अभाव में एक महान वैज्ञानिक की जान चली गई और एक देव समाज के कर्मचारी भी परलोक चले गए। इस प्रकार उन्होंने भौतिक रोशनी की महिमा का वर्णन किया ।

मानसिक रोशनी के अभाव में कैसे इंसान दुख और क्लेश उठाते हैं उसका वर्णन किया । उन्होंने ईश्वर चंद्र विद्यासागर के माता का उदाहरण देकर सात्विक रोशनी को पेश किया। देव ज्योति में कैसे अंधेरा दूर होता है और हमें नई दृष्टि मिलती है उसका वर्णन उदहारण सहित किया गया।

18 जून 2024 सुबह 8.30 बजे

आज की सभा माननीय श्रीमान सरताज सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने संत बजरंग बिहारी जी के थोड़े समय के देव समाज में प्रवेश से आए जीवन परिवर्तन का बयान किया । फिर सभापति जी ने श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल जी की घटनाओं का वर्णन किया । सभापति जी ने पिछली सभाओं का संक्षिप्त बयान करके वर्तमान जनों को भाव प्रकाश करने के लिए आमंत्रित किया। बहुत सारे धर्म संबंधियों ने भाव प्रकाश किए। भाव प्रकाश करने वालों में एक नए जन भी शामिल थे ।

भाव प्रकाश

1. श्रीमान गुरुदेव राज जी : जो "असरों" की सभा हुई उन असरों की वजह से हमारी जिंदगी में सुधार आया है । अगर यह असर न मिलते तो हम बदचलन होते और बहुत बर्बाद होते। अगर प्रभाव मिलते रहेंगे तो हमारा भला होता रहेगा।

2. श्रीमान जागीर सिंह जी : इतनी गर्मी में श्रीमान गौतम जी के आने का धन्यवाद किया। पहली सभा में जो प्रणाम का साधन बताया गया वह बहुत अच्छा लगा। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने एक बार लाल बहादुर शास्त्री जी के प्रणाम की घटना बताई थी। मेरा "असरों" की सभा से बहुत लाभ हुआ है। पहली सभा में माता - पिता के संबंध में जो भजन गया गया था, उससे मेरे ऊपर बहुत असर हुआ और अपने माता - पिता के निमित्त मैंने कुर्सियां दान करने का वायदा किया है।

3. श्रीमान सुंदर लाल जी : श्रीमान गौतम जी आए हैं बहुत खुशी हुई। बहुत असर हुआ है। सभाओं के असर से सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। माता - पिता का सम्मान करना बाकी धर्म में रहकर नजर नहीं आया। पहले माता - पिता का अपमान करते थे । अब गुरु महाराज की कृपा से माता - पिता भाई बहनों और साथी मनुष्यों के उपकार नजर आते हैं ।

4. श्रीमान बलदेव सिंह जी ढाणी : सत्यदेव की जय। इन सभाओं में अपनी कमियां नजर आई हैं। मैं अपने बच्चों पर गुस्सा हो जाता हूं, अब गुस्से पर काबू करूंगा। श्रीमान सरताज जी ने मेरे सुझाव पर गुस्सा नहीं किया, अगर यह सुझाव वह मुझे देते तो मैंने गुस्सा कर जाना था।

5. श्रीमान शीशपाल जी (नए जन) : सबका धन्यवाद किया। यहां जो दान मिला है उसका बयान नहीं किया जा सकता। मैं अपने गुस्से पर काबू करूंगा। मैं अपने बच्चों को प्यार करता हूं, पर गुस्से में उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता अब गुस्सा नहीं करूंगा।

6. अगम जी (छोटा बच्चा) : मैं छठी क्लास का विद्यार्थी हूं । पहले मुझे डर लगता था परंतु यहां आकर मुझे डर लगना बंद हो गया है। अपनी पढ़ाई का मूल्य मुझे यहां नज़र आया है।

7. श्रीमान जश्न जी : सत्य देव की जय। (उन्होंने माता - पिता जी के उपकार बताए।) मेरे बड़े मामा जी के पास कोई बच्चा नहीं था, अगर मेरे माता - पिता मुझे मामा जी को दे देते,

तो मैं यहां देव समाज में कभी ना आ सकता । (उनका ब्यान प्रभावशाली था)।

8. श्रीमान जसविंदर सिंह जी : श्रीमान बलदेव सिंह जी, ढाणी से माफी मांगी। उन्होंने अपनी नुक्ताचीनी पर माफी मांगी। बच्चों को देव समाज में लाने की प्रेरणा की । श्रीमान सरताज सिंह जी ने श्रीमान राम सिंह जी की अच्छी घटना का ब्यान किया । श्रीमान जोगिंदर पम्मा जी ने अपने भाई की सेवा का वर्णन किया। अंत में देव समाज के शुभ कार्य के लिए 1250 रुपए दान प्राप्त हुआ।

मल्लेकां में शुभ संग्राम के बाद श्रीमान सुखदेव जोसन जी, श्रीमान जसविंद्र सिंह जी, श्रीमान गौतम जी श्री गंगानगर के लिए रवाना हुए ।

श्री गंगानगर :

यहां पर सभी धर्म संबंधी श्रीमान सुरेंद्र भाटिया जी के घर पर इकट्ठे हुए। उन्होंने अपने कुछ पड़ोसियों को भी बुला रखा था। धर्म संबंधियों ने वहां पर छोटी सी सभा की। सबसे पहले श्रीमती रीटा जी ने भजन का गान किया। भजन का गान इतना सुंदर था कि वहां पर बहुत हितकर वातावरण बन गया । उसके बाद श्रीमान गौतम जी ने देव समाज के शुभ कार्य का वर्णन करते हुए बताया कि देव समाज कैसे मोटे पापों और मोटे मिथ्या विश्वासों से इंसानों को बचाती है। उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि कैसे दुनिया में संबंधों में बुरा हाल है और देव समाज का वातावरण कैसे शुभ काम करता है । श्रीमान सुरेंद्र भाटिया जी ने खीर आदि से सबकी सेवा की। इस छोटी सभा के बाद धर्म संबंधी श्रीमान अशोक कुमार जी, श्रीमान ज्ञान चंद आहूजा जी और श्रीमान रामजी दास पसरीजा जी से मिले और कुछ हितकर बातचीत की।

पदमपुर : फिर तीनों धर्म संबंधी श्रीमान सुखदेव सिंह जी जोसन, श्रीमान जसविंदर सिंह जी और श्रीमान गौतम जी पदमपुर के लिए रवाना हुए । पदमपुर में धर्म संबंधियों ने श्रीमान हेमंत जी धमीजा की सहायता से श्रीमान गोल्डी जी और श्रीमान दौलत सिंह जी से मुलाकात की।

18 जून 2024 रात 7.30 बजे सभा की गई।

सबसे पहले श्रीमान सुभाष सेतिया जी ने भजन "हमारे पूजनीय सतगुरु जी तुम हो धन्य जी तुम हो धन्य".....गाया।

सभापति श्रीमान गौतम जी ने बताया कि नेचर में नियमों का राज है । उसमें दो नियम काम कर रहे हैं, जिसे विकास और विनाश का नियम कहते हैं। किसी भी मनुष्य का विकास और विनाश उसके द्वारा पाई गई पूंजी और वातावरण पर निर्भर करता है । उन्होंने बताया कि पूंजी को हम बदल नहीं सकते परंतु हम अपने वातावरण को बदलकर अपना सच्चा विकास कर सकते हैं और विनाश से बच सकते हैं। उन्होंने बताया कि कैसे श्रीमान हितैषी सिंह जी पर वातावरण का असर हुआ। एक हैड मास्टर की घटना का भी वर्णन किया गया । उच्च असरों की कीमत को हाज़रीन पर रोशन किया गया।

19 जून 2024 सुबह 9.00 बजे :

श्रीमान गुरुचरण सिंह जी पाहवा साहिब ने 'जीवन ज्योति के तुम सूर्य.....' भजन का गान किया। इस सभा में सभापति गौतम जी ने बताया कि कैसे अंधेरे से हानियां होती हैं और अंधेरे से जान तक भी चली जाती है। उन्होंने बताया कि कैसे मिथ्या विश्वासों का अंधेरा इंसान की हानि

करता है। उन्होंने श्रीमान सरदार जमीयत सिंह जी, उनके पुत्र श्रीमान सरमुख सिंह जी और श्रीमान बुध सिंह जी की घटना का वर्णन किया। उन्होंने श्रीमान गुरबख्श सिंह जी और श्रीमान राम सिंह जी के अनपढ़ होते हुए भी इस वातावरण की रोशनी से उनकी जो मानसिक शक्तियां विकसित हो गई थीं उसका वर्णन किया। उन्होंने सात्विक रोशनी के उदाहरण पेश किए। उन्होंने बताया कि कैसे देव ज्योति इंसानी दिमाग को रोशन करती है और उसका विशेष भला करती है। दिन के समय श्रीमान सोनू जी और श्रीमान बी. पी. सिंह जी से हितकर बातचीत की गई ।

19 जून 2024 रात 8.00 बजे :

श्रीमान सुभाष सेतिया जी ने भजन का गान किया । सभापति जी ने एक परिवार में बच्चों द्वारा अपने माता का सम्मान पूर्वक अंतिम संस्कार भी न किए जाने और उनकी कृतघ्नता का दृश्य पेश किया। उन्होंने एक माता द्वारा अपने ही बच्चे की हत्या करने का भी दृश्य पेश किया । उन्होंने बताया कि कैसे हमारे संबंध विनाश की ओर चले जाते हैं और भगवान देवात्मा नेचर के विकास क्रम में इंसानी हृदयों में उच्च परिवर्तन पैदा करने के लिए आए हैं और उन्होंने मरती रूहों को बचाया है। कैसे उन्होंने एक जेठानी के जीवन में शुभ परिवर्तन पैदा किया, कैसे उन्होंने श्रीमती सावित्री सिद्धू जी के जीवन में परिवर्तन पैदा किया उसका वर्णन किया गया। रात को श्रीमान गोल्डी जी के घर पर खाना खाने के बाद श्रीमान सुखदेव जोसन जी ने सम्बन्धों के विषय को लेकर बहुत हितकर बातचीत की और उनके बच्चों की नीति शिक्षा करवाई।

20 जून 2024 : सुबह बहुत जल्दी उठकर तैयार होकर तीनों धर्म संबंधियों ने हितकर भजनों का गान किया । भगवान देवात्मा के श्री चरणों में और नेचर की सहायकारी शक्तियों से सहाय प्रार्थना की। फिर तीनों ने "जग मेरे दिवेया तैंनू मैं निम्मा होण नई देणा" भजन गाया। इस साधन से बहुत सुन्दर भाव पैदा हो रहे थे। तीनों की आखों में आंसू थे।

गजसिंहपुर : सुबह 8.00 बजे

श्रीमान मोहनलाल जी के घर पर उनके विवाह की खुशी के उपलक्ष्य में सभा की गई। सभा में उनके पारिवारिक जन और कुछ स्त्रियां शामिल हुईं सबसे पहले "जीवन ज्योति के तुम सूरज अंधेरा दूर करते हो" भजन का गान किया गया। उसके बाद श्री मोहनलाल जी को उनके विवाह की शुभकामनाएं दी गई। बहुत साधारण शब्दों में भगवान देवात्मा की संबंध तत्व की शिक्षा को पेश किया गया और संबंधों में हितकर मेल को उदाहरण सहित वर्णन किया गया। भगवान देव आत्मा ने विवाह के संबंध में जो शिक्षा दी है, उसका ब्यान किया गया और फिर **"सच्चे पति और पत्नी वह जो उच्च लक्ष्य रख मेल बढ़ावें"** भजन का गान किया गया। जब श्रीमान मोहनलाल जी और उनके भाई और पारिवारिक जनों ने अपनी माता जी के चरणों में प्रणाम किया तो उनकी माता जी की आंखों में आंसू आ गए और एक स्वर्गीय दृश्य उत्पन्न हो गया। उनके भाई ने एक महीने के लिए नशे छोड़ने का वायदा किया ।

सुबह 10 बजे : दूसरी सभा सुबह 10.00 बजे श्रीमान दुनीचंद जी (बाबा जी) के घर पर की गई। इस सभा में नशों और मांसाहार की बुराइयों

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

का वर्णन किया गया और यह बताया गया कि कैसे नशे और मांसाहार इंसान की बर्बादी करते हैं। सभा में उपस्थित बच्चों को प्रणाम का साधन करवाया गया और उन्हें यह प्रेरणा की गई कि वह प्रणाम का साधन हर रोज किया करें। बाबा जी के घर पर धर्म संबंधियों ने नाश्ता किया और आगे के लिए रवाना हुए। श्रीमान खेमचंद जी के घर पर भी धर्म संबंधी गए।

एक नया क्षेत्र : राजस्थान में एक अन्य नए क्षेत्र में धर्म संबंधी गए। वहां पर कुछ धर्म संबंधियों को मिला गया और उनसे हितकर बातचीत की गई । एक धर्म संबंधी के घर पर आधे घंटे की हितकर सभा भी हुई। फिर एक अन्य स्थान पर एक परलोकवासी की शोक सभा में धर्म संबंधियों ने परलोकवासी के लिए शुभ कामना की। भजन का गान किया गया "धर्म पाए बिना जीना, जन्म अपना ये है खोना" धर्म उच्च बनने का नाम है। माता पिता, भाई बहन, पति पत्नी के संबंध में हितकर मेल आने से धर्म आता है। बहुत संक्षिप्त परन्तु हितकर सभा थी।

21 जून 2024 सुबह 8.00 बजे : भजन और देव स्त्रोत के बाद इस सभा में बताया गया कि कैसे एक राजा को दवाई के असरों से बीमारी से निजात मिली । एक हैड मास्टर को कैसे बुरे वातावरण ने डाकू बना दिया । सेठ नानूमल कैसे बुरे वातावरण की वजह से बर्बाद हो गए । कैसे उच्च वातावरण से श्रीमान स्वामी गोविंद राम जी और श्रीमान अनोख सिंह जी और एक अन्य धर्म संबंधी के जीवन में उच्च परिवर्तन आया। उपस्थित हाजरीन पर उच्च वातावरण की महिमा को प्रकाशित किया गया।

इस सारे हितकर संग्राम में नेचर की सहायकारी शक्तियों की सहायता मिलती हुई महसूस हो रही थी।

नोट :– हम इस सारे संग्राम के लिए धर्म सम्बन्धियों को मुबारकबाद देते हैं।सख़्त गर्मी में ऐसे जगह जगह जाना और संग्राम करना उनके हृदय की तड़प को दर्शाता है। इन नन्हें पौधों में जो कोपलें निकल रही हैं, वह बड़े बड़ों को पछाड़ सकती हैं, गुरू महाराज के प्रभाव पाने और उनकी शिक्षा को फैलाने के काम के लिए इस नए ब्रिगेड को जितना भी मुबारक कहें कम है। काश! उनकी यह लगन बनी रहे और गुरू की शिक्षा को फैलाने का उनका से संग्राम और बढ़े। धन्यवाद।

–सम्पादक

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts